

विष्णुपुस्तक

आशा कस्तूरि

82

ॐ नमो श्रीवज्रसत्वायः॥

१२ नमः श्रीवक्रसत्वाय ॥ ॐ ॥ श्री ॥ नमः ॥ ॐ ॥
गंगापिपु क्रियासाह ॥ ॐ ॥ गंगपिपुदानकर्तृकामायकृता
नमः आदावाचार्यपत्रीरुयग ॥ सचकथंरुग ॥ संयमः ॥ चि
शुद्धात्माकिर्गद्विय ॥ सुमानसे ॥ वृत्तानिनासासंनुष्टीकि
यावान् सुविचक्र ॥ १ ॥ सचवगुत्तुथाद्वचस्त्रापथसुसमाहिता ॥
एवं च्छु चयक्रादिसक्रयं पितागग ॥ ॐ ॥ इच्छात्माव

चक्रकृतावकासीकलहप्रिय ॥ असुरुद्धाशुचिचक्रसु
वगुत्तुवृत्तयग ॥ निनासापिगगंयाकिदाताजाननकंवक्र
गगपूर्वयष्टादोनखक ॥ १ ॥ दिक्कदायत्वाशुचिस्त्रानकृप्या
ग ॥ न्वचिथ ॥ पूर्वयष्टाकृतार्कचक्राचार्यादिनिमक्रयग ॥
पयप्रपागकाक्षनीर्धगत्वा सुचिस्त्रानकृप्याग ॥ गुत्तु ॥ १ ॥
मथापलिफायात्सोवात्तुकासकायचिस्त्रागस्यापनिदीय

वर्तिकां स्तुपयेत्वा श्रीसूर्यार्घ्यं दद्यात् ॥ चन्द्रनपूष्पकंप्रक्रि
यत् ॥ यजमानस्य विजिचन्द्रनपूष्पं स्तोत्रं यत् ॥ ॐ विजिचि
न्द्रनैदद्यात् ॥ विजिसिपूष्पं दद्यात् ॥ विधेः श्रुत्वा कोऽपि न दूतं प्रक्रि
यत् ॥ नमो बुधाय रक्षायक ॥ इति कुण्डलशायलाकारगण
संज्ञितं पूर्वातिमूर्खात्स्वाचमूर्धं सूर्याय दद्यात् ॥ महादा
नवाब्धं यत् ॥ ॐ शुभश्रीमन्कोशीशक्तसिंहगणगणप

र्याय रत्नकल्पसहस्रनामला कथा गोवेव स्वस्वन्वक्तव्यं सूर्य
गादापनां कलियुगप्रथमचरत् ॥ रत्नगणवत्पुत्रकृत्पाश्र्वभय
हेमवत्यादिवासकोशेने उपचन्द्रोदयो ॥ १० ॥ आर्यावर्कपूष्प
मो कर्कटिकनागनाका लयमागवासातिथि महाद्वन्द्वे श्रीस्वयं
चैत्यस्तु नमो श्रीगुरुभ्यो नमो प्रज्ञापानिगाधिदिगं श्रीमन्मन्त्र
याधिदिगं रत्नमो नमो लसत्पुल्लश्रीसत्त्वप्रमत्तुलाकायस्तु

दिशागिनीगणगुणिशम्भुसामृत्काष्ठेयवसिंहिनीव्याघ्रिणी
गणेशकृष्णायमहाकाशहीनीगीहनुतद्वेषकारगणसंहर्तगु
प्तपालनकर्तृगललिंगपत्तनश्रीमदार्यावलाकिर्तव्यविजयना
म्भ॥शुभ॥दानयमत्पादि॥॥श्रीसूर्यायकृतार्घ्यनमः॥पादार्घ्यं
मः॥प्रत्यर्घ्यंनमः॥लंखस्वपागय॥धूंकन॥श्रीसूर्याययकधूपंनमः॥
जादिलंखभालन॥श्रीसूर्यायपाशंप्रतीकस्वाहा॥स्वांगुल

वाय॥ आदित्याय स्वाहा॥ शमाय स्वाहा॥ मृगशाय स्वाहा॥ बृध
य स्वाहा॥ बृहस्पतये स्वाहा॥ शुक्राय स्वाहा॥ अग्निशाय स्वाहा॥
ग्राहवे स्वाहा॥ केतवे स्वाहा॥ सिद्धऋकंकाः आरुत्वां॥ श्रीसूर्याय
नमः॥ चन्द्रनमः॥ यक्षयक्षपवीनमः॥ यक्षपूष्यनमः॥ गायत्र्याय॥
ॐ धर्मा ५॥ किं गतं॥ नमः॥ श्रीसूर्याय॥ ऊवाकसूतसंकाशंका
७५ पायं महाश्रुति॥ गंभीरिस्तर्वपापविघ्नहयप्रणामादिदिवाक

यं॥ गं॥ ॥ धूमि कर्म या यं गं॥ लपाल सा किं॥ यं॥ ॥ आ किं॥ लं॥ ख
 आनं॥ ॥ अ॥ य॥ का॥ नं॥ ॥ गु॥ नू॥ पा॥ दा॥ र्घ॥ का॥ य॥ ॥ गु॥ नू॥ पा॥ दा॥ र्घ॥ न॥ म॥ ॥ प्र॥ त्य॥ र्घ॥ न॥
 म॥ ॥ आ॥ कि॥ गु॥ नू॥ या॥ गं॥ कं॥ ॥ र॥ क्का॥ हं॥ त्वां॥ न॥ म॥ स्ता॥ मि॥ गु॥ था॥ ना॥ थ॥ प्र॥ सी॥ दि॥
 म॥ ॥ चि॥ थ॥ आ॥ कि॥ ति॥ च॥ क॥ स्वां॥ ॥ व॥ जा॥ चा॥ र्घ्या॥ य॥ च॥ न॥ न॥ म॥ ॥ व॥ जा॥ चा॥ र्घ्या॥
 र्घ॥ पु॥ ष्यं॥ न॥ म॥ ॥ गं॥ गा॥ पू॥ जा॥ ला॥ ॥ सु॥ सं॥ क॥ त्प॥ ॥ गु॥ नू॥ म॥ ॥ उ॥ ला॥ दि॥ ला॥ क॥ पा॥
 न॥ व॥ लिं॥ दा॥ प॥ थ॥ गं॥ ॥ रु॥ ल॥ मू॥ ल॥ ने॥ थ॥ या॥ दि॥ स॥ म॥ र्घ॥ थ॥ गं॥ ॥ दी॥ पं॥ च॥ ॥

धनकपलाहिस गथ ॥ ६॥ इद्र पंचासृगः हाम कदा चाकृतमधिग
सं कपलाहनकंपूर्वस्वक ॥ वाक् ॥ गिलाइसगिमृषिचक्र १७
नचक्र १७ गथा ॥ मधुना नासिकावाडु क्रिभा देसा धृगमेवा ॥
दधिवेकटिजा नुर्यां गायनहस्तपादयो ॥ मृनादीसर्वगया १७
जायनधाधिविष्यवान् ॥ जाकि गंका ॥ पिण्डदानमहं कविष्यध
यक ॥ कपलासकृष्णनडमलक ॥ वाक् ॥ मृनां वृकृष्णग्रामिम

धूसर्पिगिलगथा ॥ दधिक्रीरपना प्राक्ता मृष्टांगपिण्डसंरव ॥
सकृष्णस्वधा ॥ ६॥ इद्र पंचासृगः ॥ समिलासवर्कसंसादया
सधृगसदधिसर्वापकनसहिगायस्वधा ॥ पिण्डकायका ॥ ग्या
कसालक ॥ हा मल्लुसाल ॥ रागथयक ॥ उधर्मधगुरुगंस्वा
हा ॥ चिरादवयागा ॥ प्रविगामहयधाना ॥ पिण्ड
स्वधा ॥ गापात्रा ॥ पिगामह ॥ पिण्डु रागंस्वधा ॥

आशुवाग ॥ पिगामह x पिष्टु रागं स्वधा ॥ त्वपिगा x
पिष्टु रागं स्वधा ॥ श्रुव रुपाग ॥ मिता वाग रुलसा ॥ प्र
पिगामही य धाना म्नेन पिष्टु रागं स्वधा ॥ नापा अडि ॥
पिगामही x पिष्टु रागं स्वधा ॥ अडि ॥ स्वमागा x पिष्टु
रागं स्वधा ॥ माम ॥ विकलाय पिष्टु रागं स्वधा ॥
विकलायागा ॥ अपनप रु रुलसा मालका गयक ॥

चिरादव झाचक ॥ जब ५ आष्यग गाय गरु गथा ॥
धर्म आगु गरु स्वाहा ॥ पिष्टु झाचक ॥ गपला पाला
गरु गथा ॥ पिष्टु गरु स्वधा ॥ हामलनं ह यथा ॥ सुगिले
ह्यस्वधा ॥ कपला चिल ॥ लाहासिक ॥ धनये गायम
गुम समग धूनियाग कृश आसुन गयका ॥ लप गन यवा
का ॥ यथा पूर्व वा धिस्तव चर्यायां चवरि स पूष

त्ययुष्मन्ना विधानार्थं अमुकं गुरुः ॥ अस्मन्
धायकं ॥ अस्मन्मज्जमानस्य ॥ दं गं द्रुल समासासव
॥ भूषां सा द्वा गस्त चूग सद धी सर्वा पिकय धा साहिना
अय धर्म ध्या गुवा गी ध व ज र द्वा न काय कू ॥ सन
मूपगिष्ठ गाम् ॥ कू ॥ वस्तु मूप गिष्ठ गाम् ॥ ॥ गम ॥
स ॥ पश्च ॥ गमाग र द्वा न काय कू ॥ सन मूपगिष्ठ गाम् ॥

मगगपा ॥ वेद प्रवर्ण र द्वा काय कू ॥ सन मूपगिष्ठ गाम्
॥ कू ॥ वस्तु मूपगिष्ठ गाम् ॥ र वूला लप ग ली ध ॥ वस्तु
जीप गुपा गु रय स्व धा ॥ ल र व हा य ॥ अरि विं चा प्र रय स्व
धा ॥ ॥ ॥ कि स्वा ग य ॥ ॥ ॥ स पू य ग ॥ ॥ ॥ धा ज रय स्व धा
॥ ला हा ग न ग ला र ग व न्ना ॥ अधि प गु पा गु रय स्व धा ॥
धन चिर ग धी आ नं ग य ॥ अय ॥ का न ॥ ॥ ॥ वि प धी धि

रिविविधं तु वक्रं कुरु नन्दनं कमुनि काष्ठं पठाम्य
मुनि प्ररुगिनां धीधर्मधातुबोधिष्ठानपञ्चरत्नमा
गावेषु प्रवर्णनं देवारुद्राजकस्य सुप्रगुष्ठितवज्रासनं
॥ लंखनमन ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

ST. JOHN'S

82

201

[illegible]

म्यायस्वाहा॥ कपिलायस्वाहा॥ मगयाग॥ वेष्टप्रवर्धुं यस्वाहा
धनन्दायस्वाहा॥ मानिभद्रायस्वाहा॥ पूर्णभद्रायस्वाहा॥ वि
ष्णुनन्दायस्वाहा॥ सिरुल्लुगिके॥ चन्दनसिन्दूरसुपनपु
ष्पपवित्रपापनाशनम्॥ आपदाहृजगनित्यलक्ष्मिवर्द्ध
नुसुवदा॥ उडका॥ ६० देवपञ्चमनाजगत्प्रभृतिग
दयामिपञ्चमं कर्णप्रागृह्यथासुखं॥ स्वाहा॥ काय॥ उत्त
कांस्तुलादिद्यापञ्चवर्धुं नगंधिना॥ स्वाभिदं च समासु

कांस्तुलादिद्यापञ्चमोदगां॥ श्रीवज्रिकायदधिचक्रनेवेद्य
दानपात्रमिगापुमचसमूहस्तुजगत्समयकृत्वाहा॥ इल्लु
ला॥ इल्लुल्लुगमेधुर्लुगगादादिमप्रिदलादय॥ कर्क
टीचूगनाजगन्तानिदल्लुधर्मवय॥ धूं॥ ईधर्मधूपध्या
नपात्रमिगापूजांभक्ष॥ मग॥ हिहल्लुल्लुगालयदीपदा
नपात्रमिगा॥ गायहल्ला॥ जाड्यजाड्यदल्लुल्लुगानपात्रमिगा
॥ किज्वल॥ नैडेनमधुपञ्चवर्धनां॥ नंदारद्राजयासी

म्या ५॥ नृकु संबीजसंज्ञा गं ५॥ आरव लवि य ॥ मून रमहामून य
सुरवावत्पां मुनिग के नु साहा ॥ जाकिलं रव कयो डी स्व हो वि
योगा ॥ यथा दीमान अन्न संकल्प सिद्धि जम् ॥ धने कृहा पुत्रिका
पूजा ॥ इति कखाय के ॥ कृहा अठि लिन्धा के ॥ इति लाहाय
काय ॥ धने रवल क संकृष्ट ॥ पुत्रिका गस्य कृन क म्रद्व काय ॥
यथा पूर्व वा धि सत्व च पाया च नर मागा पिता पूर्व क संक
पूत्र धरि स फनि धरि य पूष्म ना विहाय ५५ ध का ५५ परम

अथ अस्मन् पञ्चमानस्य ॥ गि गं दल समासा सुव ५५
५५ साद द्या स घृग सम धु स दधि सवी प के ज ५५ साहिना
पत्र य प्रापिगा मह पिता मह स्वा पिता यथाना मुने कृहा
५५ न कृहा ॥ प्रि का कृ ५५ व स मू प नि ५५ गां ॥ कृ ५५ हो मा
लं रव गथा गिले द के वि या ॥ प्र पिता मह पिता मह स्वा पि
गा यथा ज्ञा मुने कृ ५५ म द क स्व धा ॥ गिले द क स्व धा ॥
ग ५५ म द क स्व धा ॥ सा पू ५५ ॥ ३ के कं नि प्रा च नि ५५ प्रा च नि ५५

हस्त
प्रतिकर्म सर्व कर्म इयं क जी स्व धा ॥ पंचामृत विधा ॥
उं सगितां सव ७५ संभादद्या सद्युग समधु सुदधि स्वा
पकच ७५ सहिगाय स्व धा ॥ लंख विधा ॥ उ पुण्य महोप
७५ पत्रिमिग पुण्य पत्रिमिगा पू ७५ ज्ञान समुद्रा प
त्रिगा ॥ उं सर्व सस्का जपनि ७५ धर्म ग ग ग ७५ मुमुक्षु
लुगा वि वि ७५ महानय पविवा न स्व धा ॥ सिन्धु निका
उ चंदन चंदनानि वज्र पात्र मिगा पू म ध समुद्र ज ७५ स

मय स्व धा ॥ उकाच ह नागय ॥ यज्ञा वरु ७५ मील पा
त्र मिगा पूजा म ध समुद्र ज ७५ समय स्व धा ॥ गंती रि
ला छा यी ॥ गंगना उ रे गना ज पू ष्म ज्ञानि पात्र मिगा
पूजा म ध समुद्र ज समय स्व धा ॥ धर्म वज्र काय ॥ धर्म
चक्र ने वर्य दान पात्र मिगा पूजा म ध समुद्र ज ७५ स
मय स्व धा ॥ हल हल काय ॥ हल हल गम ध ७५ उगा यी
जिं व रि हला य ॥ कर्कटी चूग ना ज ग न गानि हल ७५

षय ॥ ध्रुः सगविय ॥ द्विः श्राधाय हलर हल यर धूप दीप
 दान पात्र मित्रा पूजा मद्य समूद्र रु ज ७७ समय स्वध ॥ गा
 यत्र हलि ॥ ३ सर्व विगुला ऊ केला ऊ ७७ लि पात्र मित्रा पू
 जा मद्य समूद्र रु ज ७७ समय स्वध ॥ कि गे ना ॥ वि फान
 पुमहा धा ज ट फा या वे ग ज ७७ भी नदि ॥ ट फा या म धु सं व
 दा तं बुद्ध प्र ७७ माम्य ह ॥ आरय ग वि ध ॥ ३ मू ने स्म ह म
 ने सुरवा व ग्या मिनु ग च नु स्व ध ॥ जा किल रवे ड नि ड सि
 या

कल्प ॥ यथा दीमान श्र न स कल्प सिद्धि ज रु ॥ गद नू पि ७
 का ज य रा ॥ कृ ७७ स न प रा से नू ॥ पूर्वा कि अया दि वा क प ७
 १० ॥ यथा ग ग या ग गा या पूर्व व र ॥ प्रापि गा म रु पि गा म रु
 स पि गा यथा ना म न कृ ७७ स न मू पा गि ७ गा ॥ कृ ७७ स न प
 ने रु प ॥ व सू ध नी प य पा प्रत्यः स्व धा ॥ ल ख न ह य ॥ अ लि वि
 चा प्रत्यः स्व धा ॥ स्वा ऊ कि ग य ॥ सु पू ष्य ग ७ पू ल धा प्रत्यः स्व
 धा ॥ भिला र व ना ॥ मा धि प य पा प्रत्यः स्व धा ॥ य न पि ७

ना ३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वाक् ॥ यजमानस्य क्वा ६५ परमार्थ ॥ पूर्ववादि
सत्त्ववर्षायां च जगि मागापि गृ पूर्वजामः सप्तः पूज्यवर्षः प्र
पूषमाणविहाज ६५ यका ६५ परमार्थ ॥ यत्र स्म गय जमानस्य
वृगे गन्तुला सगिला सदधि समधू स घृ ग सख ६५ सर्वापि क
६५ सहिगाय यदि सद्य प्रपच्छामि सकृ गार्थ गे ६५ लं प्रपच्छ
अपि प्रपि गामह यथा ना ननापि ६५ स्वध्या ॥ पिगामह यथा
नामि पि ६५ स्वध्या ॥ स्वपि गृ यथा नामि पि ६५ स्वध्या ॥ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is written in black ink on aged, yellowish paper. The script is cursive and appears to be a form of Hindi or Sanskrit. The text is arranged in three horizontal lines, with some characters being larger and more prominent than others, possibly indicating emphasis or specific grammatical markers. The overall appearance is that of an old, handwritten document.

५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥